1/

Philosophy B.A Hons 2 Subsidiary

Shankarac's theory of world. (शंकर का विवर्तवाद सिद्धान्त)

उपनिषदों की भाँति शंकर भी एक मात्र ब्रह्म के सिवा कुछ भी सत्य नहीं मानते। उन्होंने विश्व को मिथ्या स्वीकार किया है, अवास्तविक मानते हैं लेकिन प्रश्न उठ सकता है कि विश्व मिथ्या, असत्य या अवास्तविक है तो फिर सत्य या वास्तविक क्यों दिखाई पड़ता है? शंकर ने उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर स्वप्न की उपमा के आधार पर देने का प्रयास किया है। स्वप्न में ~~दिखाई~~ दिख पड़नेवाली घटना सत्य दिखाई पड़ती है लेकिन नींद भी खुल जाने पर वह मिथ्या हो जाती है। ठीक वैसे ही दिख पड़ने वाले असत्य में बदल जाती है। इसी प्रकार अज्ञानता के कारण विश्व वास्तविक रूप में दिखता है लेकिन जैसे ही अज्ञानता दूर हो जाती है वैसे विश्व की वास्तविकता सामने आ जाती है। अतः यह विश्व मिथ्या है और ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है (ब्रह्म सत्यं ~~जगत मिथ्या~~ जगन्मिथ्या)

असत्य या अवास्तविक रूप में दिख पड़ने वाली विश्व की व्याख्या में शंकर ने एक दूसरा उपमा जादूगर के द्वारा प्रदर्शित कला का सहारा लिया है। जिस प्रकार जादूगर ने एक ही वस्तु को कई रूपों में परिवर्तन कर दर्शकों को चक्कर में डाल देता है इसी प्रकार अज्ञानता के कारण एक ही ब्रह्म को विश्व में व्याप्त देखकर उसे भी ब्रह्म की भाँति सत्य या वास्तविक समझ लेता है लेकिन वास्तव में ब्रह्म विश्व में व्याप्त नहीं होता बल्कि ब्रह्म का आभासमात्र दृष्टिगत होता है।

विश्व की अवास्तविकता को प्रमाणित करने के लिए शंकर ने एक और उपमा का सहारा लेते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि विश्व रस्सी में दिखाई पड़नेवाली सर्प के समान दिख पड़ता है। सर्प का आभास रस्सी है इसी प्रकार विश्व का आधार ब्रह्म है। जिस प्रकार सर्प रस्सी के वास्तविक रूप को ढक लेता है ठीक इसी प्रकार ब्रह्म में दिख पड़नेवाला विश्व को वास्तविक नहीं माना जा सकता है।

P.T.O.

शंकर के अनुसार विश्व ब्रह्म का वास्तविक रूपान्तरण (Real transformation) नहीं है। वास्तव में ब्रह्म का विश्व में परिणत होना रीतिवादियों का ब्रह्म का विवर्त रूप कहा जाता है जिसका समर्थन ब्रैडले (Bradley) ने भी किया है। वस्तुतः विश्व ब्रह्म का विवर्त या आभासमात्र (Mere appearance) है।

शंकर के अनुसार सत्ता के तीन प्रतिभासिक (apparent), व्यावहारिक (Practical), तथा पारमार्थिक सत्ता (Transcendental Reality) माने गये हैं। प्रातिभासिक सत्ता, सर्वथा असत्य है जैसे - स्वप्न में रजत की प्रतीति। व्यावहारिक सत्ता व्यावहारिक दृष्टि से सत्य होते हैं पर तात्विक दृष्टि के आधार पर इनका खंडन होता है, जिसका खंडन किसी भी प्रकार से संभव नहीं है उसे पारमार्थिक सत्ता कहा जाता है, उदाहरण - ब्रह्म पारमार्थिक सत्य है।

उपर्युक्त तीनों सत्ताओं में विश्व को व्यावहारिक सत्ता के अन्तर्गत माना है। विश्व नहीं स्वप्न की भाँति असत्य है और न ब्रह्म की भाँति सत्य है। व्यावहारिक दृष्टि से विश्व सत्य है पर पारमार्थिक दृष्टि से विश्व असत्य है। इसके लिए शंकर ने दृष्टान्त दिया है जिसे संक्षेप में व्यक्त किया जा रहा है,

(i) विश्व एक दृश्य है क्योंकि दृश्य वस्तु असत्य हुआ करते हैं,

(ii) विवर्त या आभास असत्य माना जाता है। विश्व ब्रह्म का आभास या विवर्त रूप है,

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर यह स्थापित होता है कि विश्व पारमार्थिक दृष्टिकोण से असत्य है।

शंकर ने बौद्धों के विज्ञानवाद को स्वतंत्र विज्ञान मानने एवं आत्मनिष्ठ न मानकर वस्तुनिष्ठ (objective) माना है,

बौद्धों के शून्यवाद का भी शंकर ने खंडन किया है। शून्यवाद के अनुसार शून्य ही विश्व के मूल में होता है। शंकर के अनुसार विश्व का आधार शून्य नहीं बल्कि ब्रह्म है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि शंकर ने विश्व को व्यावहारिक दृष्टि से सत्य मानते हुए पारमार्थिक दृष्टि से इसे असत्य माना है जिसका समर्थन समकालीन दार्शनिक सम्प्रदायों द्वारा भी किया है।